अध्ययन सामग्री
बी.ए. पार्ट III
पेपर षष्ठ
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्राध्यापक
एम.डी. जैन महाविद्यालय

नदीभिश्च

नदीभिः सह संख्या समस्यते ।
(वा०) समाहारे चायमिष्यते ।
यह विधि (संज्ञा) सूत्र है ।
शब्दार्थ है – (च) और (नदीभिः) नदियों से ---- ।
यहाँ सूत्रस्थ च से ही ज्ञात हो जाता है कि यह सूत्र अपूर्ण है ।
इसके स्पष्टीकरण के लिए 'संख्या वंश्येन' से संख्या की अनुवृत्ति करनी होगी । 'प्राक्कडारात् समासः' तथा 'अव्ययीभावः' का अधिकार प्राप्त है ।
'सह सुपा' से सह की अनुवृत्ति हो जाती है ।
इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा – नदियों (नदी-विशेषवाचक शब्दों) के साथ संख्या वाचक शब्द का समास होता है और वह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है ।
'समाहारे चायमिष्यते' वार्तिक से यह समाहार (समुदाय) अर्थ में ही होता है ।
उदाहरण – पञ्चगङ्गम् (पांच गङ्गाओं का समाहार) में समाहार अर्थ में संख्यावाचक 'पञ्चन्' का नदी विशेषवाचक 'गङ्गा' के साथ समास हुआ है ।
इसी प्रकार द्वियमुनम् (दो यमुनाओं का समाहार) में भी 'द्वि' और 'यमुना' का समास हुआ है ।

रूपसिद्धिः –

1) पञ्चगङ्गम्

पञ्चानां गङ्गानां समाहारः (लौकिक विग्रह)
पञ्चन् आम् गङ्गा आम् (अलौकिक विग्रह)

'पञ्चानां गङ्गानां समाहारः' इस लौकिक विग्रह में 'पञ्चन् आम् गङ्गा आम्' ऐसा अलौकिक विग्रह होने पर
'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' से समाहार अर्थ में संख्यावाचक 'पञ्चन्' शब्द का 'गङ्गा' शब्द के साथ द्विगु समास प्राप्त था

उसे बाधकर 'नदीभिश्च' सूत्र से अव्ययीभाव समास होने पर
'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा
'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् (दोनों आम्) का लोप होने पर
'पञ्चन् गङ्गा'
'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से पञ्चन् की उपसर्जन संज्ञा
'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसका पूर्व प्रयोग
'नलोपः प्रातिपादिकान्तस्य' से 'पञ्चन्' के न् का लोप होने पर
'अव्ययीभावश्च' से नपुंसक संज्ञा
'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' से गङ्गा के आ का ह्रस्व (अ) होने पर — पञ्च गङ्ग
'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से प्रातिपदिक संज्ञा
'स्वौजस...' से 'सु' विभक्ति
पञ्च गङ्ग सु
'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा होने के फलस्वरूप
'अव्ययादाप्सुपः' से 'सु' लोप प्राप्त था, किन्तु
'नाव्ययीभावादतोऽमत्वपञ्चम्याः' से उसे बाधकर अमादेश करने पर
'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप होकर 'पञ्चगङ्गम्' रूप सिद्ध होता है।

2) द्वियमुनम् — द्वयोः यमुनयोः समाहारः (लौकिक विग्रह)
'द्वि ओस् यमुना ओस्' (अलौकिक विग्रह)

'द्वयोः यमुनयोः समाहारः' इस लौकिक विग्रह में 'द्वि ओस् यमुना ओस्' ऐसा अलौकिक विग्रह होने पर
'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' से समाहार अर्थ में संख्यावाचक 'द्वि' का 'यमुना' शब्द के साथ द्विगु समास प्राप्त होने पर
उसे बाधकर
'नदीभिश्च' से अव्ययीभाव समास होने पर
'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा के फलस्वरूप
'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् (दोनों आस्) का लोप होने पर
'द्वि यमुना'
'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से 'द्वि' की उपसर्जन संज्ञा
'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसके पूर्व प्रयोग 'द्वियमुना'

'अव्ययीभावश्च' से नपुंसक संज्ञा
'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' से यमुना के 'आ' का ह्रस्व (अ)

द्वि यमुन

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा
'स्वौजसमौट्' से 'सु' आने पर

द्वि यमुन सु

'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा होने के फलस्वरूप
'अव्ययादाप्सुपः' से सु लोप प्राप्त था, किन्तु
'नाव्ययीभावादतोऽत्वपञ्चम्याः' से उसका अमादेश होने पर पर
'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर

'द्वियमुनम्' पद सिद्ध होता है।